Str. 405, 23. Calc. Ausg. und E. पेयूषो, die Scholien: पीयते पीयूष: । पेयूषमित्यपि । — 24. Schol. कूचितं कूचकेत्येके ।

Str. 406, 25. Culc. Ausg. B. E. त्तीरेपी, D. त्तीरेपी, die Scholien: त्तीरे संस्कृता तेरेपी (sic)। त्तीरादेपणित्येपण्

Str. 407, 29. Calc. Ausg. माप्पियो ।

Str. 409, 36. Schol. श्रेतर्मिन्यपि। — 37. Man lese: «Vier Theile Buttermilch mit einem Theil Wasser.»

Str. 410, 40. Calc. Ausg. उदकं लाविणाकं, D. उदकलविणाकं, die Scholien: उदकलविणाभ्यां संस्कृतं दकलाविणाकम् बाङलकाइत्तर्पदवृद्धिः।

Str. 411, 44. Calc. Ausg. पैठर्राष्ये उषा , D. पैठर्राष्ये उषा , die Scholien wie wir.

Str. 412, 47. Calc. Ausg. B. D. A. Die Scholien wie wir.

Str. 413, 49. Die Scholien: म्रन्ये तु सामान्यविशेषभावं पिद्हत्या-नयोर्भि रित्रेणैकार्थतामाङ: । — 50. Calc. Ausg. und die Handschriften: निष्काथा । — 51. = हप्रसादिनिष्यत्रमत्रम्, die Scholien.

Str. 414, 53. Calc. Ausg. und D. प्रच्छिलं und वित्रलं (st. वितिलं), die Scholien: वितिलम् वितिपिलिमित्यपि ।

Str. 415, 57. कुल्मा°, die Scholien: व्यस्तमिप। तेन कुल्माषमि-षुतं चेति।

Str. 418, 64. Calc. Ausg. und D. निशाह्वा। Die Scholien: निशा-च्या इति रात्रिपर्यायाः।

Str. 419, 68. Calc. Ausg. धन्याक ohne Anusvåra. — 69. Calc. Ausg. und E. मरीचं, die Scholien wie wir.

Str. 420, 71. Calc. Ausg. und D. महीषधी, die Scholien wie wir. Str. 421, 72. Calc. Ausg. पोप्पली।

Str. 422, 74. Schol. त्रीणि काण्डून्यूषणानि च प्रुगठीमर्चिषय-ल्याच्यानि समान्हतानि । त्रिकरुकमिष । — 76. Calc. Ausg. und B. बाङ्कीकं । Schol. वाल्कीके उदोच्यदेशे भवं वाल्कीकम्